अच्छे उपराष्ट्रपति में क्या हो खास

मिशेल ऑस्टीन

अपना चुनावी जोड़ीदार चुनते हुए अमेरिकी राष्ट्रपति पद के नामांकित प्रत्याशी क्षेत्र, अनुभव, लिंग, राजनीति और व्यक्तित्व जैसे मुद्दों पर ध्यान देते हैं।

वर्ष 2008 के राष्ट्रपति चुनाव के प्राइमरी और कॉकस के दौरान रिकॉर्ड संख्या में अमेरिकियों ने राष्ट्रपति पद के इच्छुकों के लिए मतदान किया। लेकिन उप-राष्ट्रपति पद के लिए प्रत्याशी का चुनाव करते हुए केवल एक ही व्यक्ति के मत का महत्व था।

अमेरिकी उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी को राजनीतिक दलों के राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी चुनते हैं। इस काम में उसे दूसरे लोगों की मदद भी मिल सकती हैं लेकिन अंततः वह एक राजनीतिक और निजी निर्णय लेता है। अक्सर चुनावी जोड़ीदार का चुनाव और उसमें निहित कारण मतदाताओं को राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की निर्णय लेने की प्रक्रिया का ठोस संकेत देता है जिसके आधार पर वह किसी प्रत्याशी के पक्ष या विपक्ष में मतदान का मन बनाते हैं।

वाशिंगटन डी.सी. स्थित अमेरिकन यूनिवर्सिटी में कम्युनिकेशन के प्रोफ़ेसर लेनार्ड स्टीनहॉर्न कहते हैं, ''इससे हमें राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की विचार प्रक्रिया की झलक मिलती है। हम समझ पाते हैं कि वह लोगों के बारे में निर्णय कैसे लेता होगा।'' क्या राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की पसंद चकित करने वाली है, जोखिम भरी है, या अनुमानित है? क्या यह निर्णय उसने और लोगों के साथ मिलकर लिया या यह उसका अकेले का निर्णय था? क्या मतदाता प्रतिक्रिया जताते हैं: उसने उसे ही क्यों चुना? या क्या बात है, कितनी बढ़िया पसंद है। चुनावी सहभागी चुनते हुए जिन बातों पर ध्यान दिया जाता है वे हैं- इससे राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के चुनाव अभियान में क्या सहायता मिलेगी और राष्ट्रपति के असमर्थ होने पर वह देश का राजकाज कैसे चलाएगा या चलाएगी।

उपराष्ट्रपति पद का मुख्य संवैधानिक उद्देश्य है राष्ट्रपति के मानसिक या शारीरिक रूप से अक्षम होने या पदारूढ़ रहते देहान्त हो जाने, त्यागपत्र देने या महाभियोग के कारण पद से हटाए जाने पर अस्थायी या स्थायी रूप से राष्ट्रपति के दायित्व या पद ग्रहण कर पाना।

अमेरिका के इतिहास में नौ उपराष्ट्रपति अपने पद पर रहते हुए राष्ट्रपति बने हैं जबकि अन्य ने अस्थायी रूप से राष्ट्रपति पद के दायित्व निभाए हैं। उदाहरण के लिए उपराष्ट्रपति डिक चेनी ने राष्ट्रपति बुश के चिकित्सा के लिए निश्चेत किए जाने की स्थिति में 2002 और 2007 में राष्ट्रपति के अधिकार ग्रहण किए। जहां लेनार्ड स्टीनहॉर्न मानते हैं कि मतदान करते हुए मतदाता चुनावी जोड़ीदार को खास महत्व नहीं देते, वहीं अन्य विशेषज्ञों का मानना है कि मतदाताओं के

जो बाइडन डेमोक्रेटिक पार्टी के उपराष्ट्रपति पद के प्रत्याशी

पैंसठ वर्षीय अमेरिकी सेनेटर जो बाइडन वर्ष 1972 से पूर्वी तट के छोटे राज्य डेलावेयर का प्रतिनिधित्व करते रहे हैं। उस समय उन्हें 29 वर्ष की उम्र में अमेरिकी सेनेट के लिए चुना गया था। वह अंतरराष्ट्रीय संबंधों और राष्ट्रीय सुरक्षा के क्षेत्रों में अपने अनुभवों के लिए जाने जाते हैं। बाइडन विदेश संबंधों से जुड़ी अमेरिकी सेनेट समिति के अध्यक्ष हैं जिसकी अमेरिका की विदेश नीति तय करने में बड़ी ताकतवर भूमिका है। वह बहुत से देशों का भ्रमण कर चुके हैं और हाल ही में जॉर्जिया में थे। वह फ़रवरी में भारत आए थे। बाइडन ने 1988 में और फिर 2008 में राष्ट्रपति पद का दावेदार बनने का प्रयास किया लेकिन आयोवा कॉकस के बाद दौड़ से बाहर हो गए। राष्ट्रपति प्रचार अभियानों में पहली बार हज़ारों समर्थकों को बाइडन को चुनने के बाराक ओबामा के फैसले का टैक्स्ट मैसेज से पता चला।

फ्रैंक ह्वैल्न - यू. पी. © साभार विकि

यू. पी. © साभार विकि

सैरा पैलिन रिपब्लिकन पार्टी की उपराष्ट्रपति पद की प्रत्याशी

चवालीस वर्षीय सैरा पैलिन अलास्का की गवर्नर हैं और रिपब्लिकन पार्टी की ओर से राष्ट्रपति के टिकट पर उपराष्ट्रपति की दौड़ में शामिल होने वाली पहली महिला हैं। वह 2006 में गवर्नर चुनी गई थीं। उन्होंने उस समय के गवर्नर को रिपब्लिकन पार्टी प्राइमरी में हराया था और अलास्का की सबसे युवा और पहली महिला नेता बन गईं। गवर्नर बनने से पहले पैलिन वैसिला, अलास्का में छह साल तक मेयर और अलास्का तेल एवं गैस संरक्षण आयोग की अध्यक्ष रहीं। गवर्नर के तौर पर पैलिन ने अलास्का का पेट्रोलियम सिस्टम्स इंटेग्रिटी ऑफ़िस बनाया जिससे कि तेल एवं गैस उपकरणों, सुविधाओं और इन्फ्रास्ट्रक्चर पर निगाह रखी जा सके और मरम्मत की जा सके। उन्होंने गवर्नर के तौर पर ही जलवायु परिवर्तन पर उपसमिति बनाई जो अलास्का के लिए जलवायु तब्दीली रणनीति तैयार करे। उन्होंने अलास्का के नीतिगत कानूनों में संशोधन में भी मदद की।

इलेक्टोरल कॉलेज वह समूह है जो वास्तव में राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति का चुनाव करता है। इनका चुनाव किसी राज्य के अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों की संख्या के आधार पर किया जाता है। अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में अधिक सदस्य होते हैं। अगर राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी किसी राज्य में डाले गए अधिकांश मत पा लेता है तो उसे उस राज्य के सभी इलेक्टोरल मत मिल जाते हैं। यही कारण है कि कोई प्रत्याशी पूरे अमेरिका में अधिक मत पाने के बाद भी किसी ऐसे प्रत्याशी से हार सकता है जो अधिक जनसंख्या वाले राज्यों में उस से अधिक मत पा लेता है।

मन में यह विश्वास जमना जरूरी है कि आवश्यकता पड़ने पर वह राष्ट्रपति पद के दायित्वों का निर्वाह कर पाएगा। ऐसा न होने पर वह दोनों प्रत्याशियों के पक्ष में मतदान करते घबराएंगे।

अक्सर प्रत्याशी अपने चुनावी जोड़ीदार का चुनाव करते हुए इस बिन्दु पर ध्यान देते हैं कि राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी से कुछ भिन्न क्षेत्र या पृष्ठभूमि वाला प्रत्याशी 'जोड़ी का संतुलन बनाते हुए' अधिक मतदाताओं को आकर्षित कर पाएगा। राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी से कुछ हटकर राजनीतिक विचार रखने वाले चुनावी जोड़ीदार भी जोड़ी का संतुलन बना सकते हैं। चुनावी जोड़ीदार घनी जनसंख्या और अधिक इलेक्टोरल कॉलेज वोट वाले राज्य का हो तो वह राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी की जीत सुनिश्चित कर सकता है।

वर्ष 2004 में मैसाच्यूसेट्स के जॉन कैरी और दक्षिण राज्य नॉर्थ कैरॉलाइना के जॉन एडवर्ड्स पार्टी के क्रमशः राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति पदों के प्रत्याशी के रूप में चुनाव लड़े। जॉन एडवर्ड्स पहले राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी रहे थे और कैरी के अभियान प्रबन्धकों को आशा थी कि उन्हें उप-राष्ट्रपति के रूप में प्रस्तुत करने से दल की स्थिति और मज़बूत होगी।

स्टीनहॉर्न बताते हैं कि नियमों के विकल्प भी होते हैं। ''1992 में अर्कान्सास के डेमोक्रेट बिल क्लिंटन ने एक अन्य दक्षिणी राज्य टेनेसी के सेनेटॅर अल गोर को अपने साथ उप-राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी चुना।''

कभी-कभी राजनीतिक दलों के नेता राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी पर कोई ऐसा चुनावी जोड़ीदार चुनने के लिए दबाव बनाते हैं जो उन्हें लगता है कि राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी की कमियों को पूरा कर लेगा। जैसे कि विदेशनीति के क्षेत्र में कम जानकारी और अनुभव वाले प्रत्याशी पर ऐसा चुनावी जोड़ीदार चुनने के लिए दबाव बनाया जा सकता है जिसने देश से बाहर काफी काम किया हो।

स्टीनहॉर्न कहते हैं कि इन दबावों के बावजूद, ''काफी कुछ प्रत्याशियों पर ही निर्भर करता है, आखिर उन्हीं को तय करना होता है कि वे अपने प्रशासन में सबसे ऊंचे पदों में से एक पर किसे चाहते हैं।'' वास्तविकता यह है कि संविधान में प्रशासन में उप-राष्ट्रपति की भूमिका के लिए प्रावधान ही नहीं है और इसलिए कुछ राष्ट्रपतियों ने चुनाव जीतने के बाद अपने चुनावी जोड़ीदारों की पूरी अनदेखी की है। राष्ट्रपति के पद पर पदासीन होने को तैयार रहने के अलावा उप-राष्ट्रपति का संवैधानिक दायित्व सेनेट की अध्यक्षता करना और किसी मुद्दे पर पक्ष और विपक्ष में बराबर संख्या में मत पड़ने पर अपना मत देकर गतिरोध खत्म करना है।

खुद को प्राप्त चुनावी जोड़ीदारों पर विचार करते हुए प्रत्याशी को एक विशेषज्ञ दल से सुझाव मिलते हैं जो प्रत्याशियों की एक सूची तैयार करता है और प्राथमिक साक्षात्कार करके उनकी पृष्ठभूमियां खंगालता है। यह दल कुछ आश्चर्यचकित सिफारिशें कर सकता है, और दूसरी ओर प्रत्याशी एक ऐसा चुनावी जोड़ीदार चुन सकता है जिसके बारे में दल ने विचार तक न किया हो। वर्ष 2000 में जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने अपने चुनावी जोड़ीदार की खोज में जुटे दल के मुखिया डिक चेनी को ही अपना चुनावी जोड़ीदार बनाकर सबको चकित कर दिया था।

स्टीनहॉर्न स्पष्ट करते हैं कि चुनाव अभियान के दौरान उप-राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी की भूमिका बदलती रहती है लेकिन अक्सर वह राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी का पूरक ही होता है। उपराष्ट्रपति पद का प्रत्याशी विरोधी प्रत्याशी पर जुबानी हमला कर सकता है जबकि राष्ट्रपति पद का अभ्यर्थी अक्सर इस तू-तू-मैं-मैं से बचता रहता है। वह सम्भावित राष्ट्रपति के रूप में नकारात्मक नहीं दिखना चाहेगा। जब रोनाल्ड रीगन राष्ट्रपति पद का चुनाव लड़ रहे थे तो उनके चुनावी जोड़ीदार जॉर्ज डब्ल्यू. बुश ने डेमोक्रेटिक पार्टी की उपराष्ट्रपति पद की प्रत्याशी जेराल्डीन फ़रारो के अनुभव, योग्यता और पदों को लेकर तीखे प्रश्न उठाए थे जबकि खुद रीगन एक स्त्री से न उलझने की भद्रलोकीय भंगिमा अपनाए रहे।

प्राइमरीज़ और राष्ट्रीय अधिवेशनों के बीच के महीनों में अमेरिकी समाचार माध्यम कयास लगाते रहे कि राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी जॉन मैक्केन और बाराक ओबामा अपने चुनावी जोड़ीदार किन्हें चुनेंगे। इस दौरान पहली बार अमेरिका के सम्भावित उप-राष्ट्रपति पद के सम्भावित प्रत्याशी के रूप में लुइज़ियाना के भारतीय-अमेरिकी गवर्नर बॉबी जिन्दल का भी नाम सामने आया।

उप-राष्ट्रपति पद के प्रत्याशी के चुनाव की प्रक्रिया पिछले 232 बरसों में विकसित हुई है। अमेरिका के शुरुआती चुनावी जोड़ीदार अक्सर जोड़ीदार कम और प्रतिद्वन्द्वी अधिक होते थे।

जरा उस स्थिति की कल्पना कीजिए यदि नवंबर में अमेरिकी एक डेमोक्रेटिक राष्ट्रपति और रिपब्लिकन उप-राष्ट्रपति चुन लें। शीर्षस्थ कार्यकारियों के दो अलग-अलग दलों से होने के कारण व्हाइट हाउस के लिए एक एकीकृत संदेश प्रस्तुत करना कठिन हो जाएगा और राजनीतिक टकरावों के चलते प्रगति धीमी हो जाएगी। अमेरिकी गणतंत्र के संस्थापकों ने व्यावहारिक अनुभव से यह पाठ सीखा। अब उप-राष्ट्रपति पद का प्रत्याशी किसी अलग दल से केवल तभी चुना जा सकता है जब राष्ट्रपति पद का सफल प्रत्याशी उसे विशिष्ट रूप से अपना चुनावी जोड़ीदार चुने।

शुरू में इलेक्टोरल कॉलेज मतों में दूसरे स्थान पर रहे प्रत्याशी को ही उप-राष्ट्रपति नामांकित कर लिया जाता था। अमेरिका के संस्थापकों को शायद लगता

अमेरिकी राष्ट्रपति जॉर्ज बुश (बाएं) और उपराष्ट्रपति डिक चेनी वाशिंगटन, डी.सी. में एक कार्यक्रम में।

फोटो: ऐंड्रू ऐल्बर्ट - पी.पी. © असोशिएटेड प्रेस

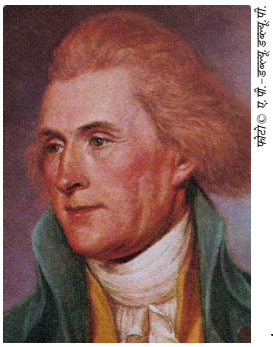

फोटो © पी. डब्ल्यू. डब्ल्यू. पी.

बिल्कुल बाएं: अमेरिका के पहले उपराष्ट्रपति और दूसरे राष्ट्रपति रहे जॉन एडम्स।
बाएं: तीसरे राष्ट्रपति थॉमस जेफ़रसन का पोर्ट्रेट।
नीचे बाएं: पूर्व अमेरिकी उपराष्ट्रपति जिम्मी कार्टर और उपराष्ट्रपति वाल्टर मोंडेल (दाएं) वर्ष 1979 में वाशिंगटन, डी.सी. में धन जुटाने के दौरान।

रहा हो कि इस तरह एक विश्वसनीय, लोकप्रिय उपराष्ट्रपति मिल जाएगा जो राष्ट्रपति का पदभार भी सुविधापूर्वक संभाल लेगा।

लेकिन संविधान के रचयिताओं ने राजनीतिक दलों के सृजन के बारे में नहीं सोचा था। वर्ष 1797 में फेडरलिस्ट जॉन एडम्स राष्ट्रपति चुने गए और डेमोक्रेट-रिपब्लिकन टॉमस जैफरसन उपराष्ट्रपति। अपने पूरे कार्यकाल में जैफरसन खुद को विरोधी दल के नेता की भूमिका में देखते रहे और अगले चुनाव में एडम्स के विरुद्ध अपने अभियान की तैयारी करते रहे।

वर्ष 1800 के चुनाव में जैफरसन और उनके चुनावी जोड़ीदार ऐरॅन बर एक ही राजनीतिक दल के थे। बर और जैफरसन को मत बराबर संख्या में मिले, इलेक्टोरल कॉलेज के नियम कहते हैं कि ऐसा अवरोध होने पर हाउस ऑफ़ रेप्रेज़ेंटेटिव्स मतदान करे। बर ने तय किया कि वह उप-राष्ट्रपति के बजाय राष्ट्रपति बनना चाहेंगे। इससे बर और जैफरसन के बीच वैमनस्य तो हुआ ही, हाउस ऑफ़ रेप्रेज़ेंटेटिव्स को भी 30 से अधिक बार मतदान करना पड़ा, तब कहीं जाकर जैफरसन विजयी घोषित हो पाए। जैफरसन से रुष्ट बर ने उप-राष्ट्रपति के तौर पर सेनेट में अपना टाइब्रेकिंग वोट राष्ट्रपति की इच्छा के विरुद्ध ही डाला।

ज़्यादा जानकारी के लिए:

अमेरिका के उपराष्ट्रपति

http://www.senate.gov/artandhistory/history/common/briefing/Vice_President.htm

अमेरिकी संविधान में 12वां संशोधन

http://www.archives.gov/exhibits/charters/constitution_amendments_11-27.html

भविष्य में ऐसी समस्याओं से बचाव के लिए जैफरसन ने 1804 में हुए 12वें संविधान संशोधन को पारित करवाने में सक्रिय भूमिका निभाही। इस संशोधन में राष्ट्रपति और उप-राष्ट्रपति पद के अभ्यथियों के एक ही टिकट पर चुनाव लड़ने की शर्त के अलावा दोनों प्रत्याशियों की अहर्ताएं भी स्पष्ट कर दी गईं -अमेरिका में जन्मा अमेरिकी नागरिक, कम से कम 35 वर्ष की आयु, अमेरिका में कम से कम 14 वर्ष निवास।

चुनावी जोड़ियां बनाना झंझटभरा राजनीतिक पचड़ा बनता चला गया। राजनीतिक दलों के नेता अपने प्रत्याशियों को नामांकित करने के लिए अधिवेशनों में मिलने लगे तो राजनीतिक प्रबन्धकों को समझ में आया कि दल के सदस्यों को खुश रखना है तो एक धड़े से राष्ट्रपति पद का अभ्यर्थी चुनना होगा और उप-राष्ट्रपति पद का अभ्यर्थी दूसरे धड़े से। इसका परिणाम प्रत्याशियों में अक्सर मतभेदों और उप-राष्ट्रपति की भूमिका गौण होना रहा। और अक्सर राष्ट्रपति जब दोबारा चुनाव में उतरते तो उनका चुनावी जोड़ीदार नया होता।

उपराष्ट्रपति के चुनाव का आधुनिक युग 1940 से प्रारम्भ हुआ जब फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट ने उप-राष्ट्रपति जॉन नैंस गार्नर की जगह कृषि मंत्री हेनरी वैलेस को अपना चुनावी जोड़ीदार बनाए जाने को तीसरी बार चुनाव लड़ने की शर्त बना दिया। दल के नेतृत्व ने उनकी शर्त मानते हुए डेमोक्रेटिक पार्टी के राष्ट्रीय अधिवेशन में वैलेस को उप-राष्ट्रपति पद का अभ्यर्थी बनाए जाने के पक्ष में मतदान किया।

तब से अब तक राष्ट्रपति पद के केवल एक ही प्रत्याशी ने उप-राष्ट्रपति पद के अभ्यर्थी के चुनाव का फैसला दल के नेतृत्व पर छोड़ा है। 1956 में राष्ट्रपति पद के डेमोक्रेटिक अभ्यर्थी एडलै स्टीवेन्सन ने सेनेटॅर एस्टेस केफ़ॉवर और जॉन एफ.कैनेडी में से किसी एक का चुनाव करने की जिम्मेदारी डेलिगेट पर छोड़ी, पार्टी सदस्यों ने एस्टेस केफ़ॉवर को चुना। डेमोक्रेटिक जोड़ी चुनाव हार गई। उधर जॉन एफ. कैनेडी को जो प्रचार और अवसर मिले, उनके परिणामस्वरूप चार वर्ष बाद वह राष्ट्रपति चुने गए।

राजनीतिक दलों का नेतृत्व चुनावी जोड़ीदार के चुनाव को प्रभावित करने का प्रयास करता है लेकिन राष्ट्रपति पद के अधिकांश अभ्यर्थी अपने चुनावी जोड़ीदार खुद ही चुनते हैं। वह सम्भावनाशील प्रत्याशियों से अनौपचारिक चर्चाएं-भेंट करके उस व्यक्ति को ढूंढते हैं जिसके साथ वह सहज अनुभव करते हैं। 1968 में रिपब्लिकन प्रत्याशी रिचर्ड निक्सन ने देश के समक्ष अपने चुनावी जोड़ीदार के नाम की घोषणा करने से कुछ ही मिनट पहले अपने चुनाव प्रचारकर्मियों को यह बता कर सकते में डाल दिया कि वह मेरीलैंड के गवर्नर स्पाइरो एग्न्यू को अपना चुनावी जोड़ीदार बना रहे हैं। निक्सन अपने चुनावी जोड़ीदार के बारे में अपने चुनाव प्रबन्धकों की राय भी ले लेते तो यह शायद सबके लिए अच्छा रहता : 1973 में एग्न्यू को अपने चुनाव से पहले की गतिविधियों के कारण लगे आपराधिक आरोपों के कारण त्यागपत्र देना पड़ा।

एग्न्यू दूसरे उप-राष्ट्रपति हैं जिन्हें त्यागपत्र देना पड़ा। त्यागपत्र देने वाले पहले उपराष्ट्रपति जॉन सी.कैल्हन थे जिन्होंने सेनेट की एक खाली सीट के लिए चुनाव लड़ने का फैसला किया। चुनाव जीतने पर उन्होंने 1832 में उपराष्ट्रपति पद छोड़ दिया।

***मिशेल ऑस्टीन** America.gov की कार्यालय लेखिका हैं। इस लेख में लॉरिंडा कीज़ लौंग ने भी योगदान किया है।*

कृपया इस लेख के बारे में अपने विचार editorspan@state.gov पर भेजिए।

उपराष्ट्रपति जो बने राष्ट्रपति

अमेरिका के 232 साल के इतिहास में नौ उपराष्ट्रपतियों को अपने कार्यकाल में ही राष्ट्रपति पद की ज़िम्मेदारी निभानी पड़ी।

- जॉन टाइलर, 1841 में विलियम हेनरी हैरिसन की न्यूमोनिया से मौत के बाद।
- मिलार्ड फ़िलमोर, जैकरी टेलर की 1850 में अचानक मौत के बाद।
- एंड्रू जॉनसन, 1865 में अब्राहम लिकंन की हत्या के बाद।
- चेस्टर आर्थर, 1881 में जेम्स गारफ़ील्ड की हत्या के बाद।
- थियोडोर रूज़्वेल्ट, 1901 में विलियम मैक्किन्ले की हत्या के बाद।
- कैलविन कूलिज़, 1923 में वारेन हार्डिंग की दिल के दौरे से मौत के बाद।
- हैरी ट्रूमैन, 1945 में दिमाग में रक्तस्राव से फ्रैंकलिन डी. रूज़वेल्ट की मौत के बाद।
- लिंडन बी. जॉनसन, 1963 में जॉन एफ़. केनेडी की हत्या के बाद।
- जेराल्ड आर. फ़ोर्ड, 1974 में रिचर्ड एम. निक्सन के त्यागपत्र देने के बाद।

-युगेश माथुर